International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 2, Issue- 4 | July - August 2025 ISSN: 3048-9490

उत्तर प्रदेश के शामली जिले के ग्रामीण विकास में सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. भूपेंद्र कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, वी.वी. पीजी कॉलेज, शामली
Email: dr.bh.kumar@gmail.com

सारांश

इस अध्याय का मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश के शामली जिले के ग्रामीण विकास में सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों की भूमिका का अध्ययन करना था। सार्वजनिक संपत्ति संसाधन प्राकृतिक संसाधन होते हैं जो किसी समुदाय के स्वामित्व में होते हैं, और सभी सदस्यों को कुछ प्रतिबंधों के साथ इन तक पहुँच और उपयोग का अधिकार होता है; इन पर किसी का भी संपत्ति अधिकार नहीं होता। सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से फल, मेवे, रेशे, औषधीय जड़ी-बूटियाँ आदि जैसे लघु वन उत्पाद, साथ ही घरों के लिए ईंधन और मवेशियों के लिए चारा भी प्राप्त होता है। चूँकि इनमें से कई लोगों की ज़मीन तक पहुँच सीमित होती है और वे अपने पशुओं से होने वाली आय पर निर्भर रहते हैं, इसलिए ऐसी ज़मीन ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन लोगों, सीमांत किसानों और अन्य हाशिए के समूहों की आजीविका के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। चूँकि ग्रामीण क्षेत्रों में ईंधन और चारा संग्रहण का अधिकांश काम महिलाएँ करती हैं, इसलिए सार्वजनिक संपत्ति संसाधन उनके लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि सार्वजानिक संपत्ति संसाधन ग्रामीण सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के कारण सामाजिक सद्भाव और शांति में सुधार हुआ है, सामाजिक विवादों और झगड़ों में कमी आई है, जीवन स्तर में सुधार हुआ है, सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा में सुधार हुआ है, सामाजिक बंधन विकसित हुए हैं, सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के प्रति लोगों का दृष्टिकोण सामाजिक रूप से सराहनीय है और अधिकांश लोग अपनी संयुक्त जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक हैं तथा सार्वजनिक संपत्ति संसाधन सदस्यों के बीच सामाजिक एकता में सुधार हुआ है।

परिचय

सार्वजनिक संपत्ति संसाधन अपने अधिकार क्षेत्र के तहत क्षेत्र के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे क्षेत्र के लोगों के जीवन स्तर को सुधारने में मदद करते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन ग्रामीण विकास का एक साधन हैं। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) के 54वें दौर के भाग के रूप में, जनवरी से जून 1998 तक सार्वजनिक संपत्ति संसाधन पर एक अध्ययन किया गया था। यह जांच देश के ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित थी। ग्रामीणों के सामुदायिक उपयोग के लिए अभिप्रेत ऐसे सभी संसाधनों को सार्वजनिक संपत्ति संसाधन कहा जाता है। ब्रिटिश शासन से पहले भारत की ग्रामीण आबादी को देश के प्राकृतिक संसाधनों के एक महत्वपूर्ण हिस्से तक अप्रतिबंधित पहुँच प्राप्त थी। स्थानीय समुदायों के पास इन संसाधनों पर अधिकांश शक्ति थी।

जैसे-जैसे इन संसाधनों पर राज्य का नियंत्रण बढ़ता गया, सामुदायिक प्रबंधन प्रणाली धीरे-धीरे बिगड़ती गई, भारत में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के अध्ययन की शुरुआत 1980 के दशक के आरंभ में हुई थी। इनमें से कुछ अध्ययनों में देश के विशाल क्षेत्र में फैले काफी बड़ी संख्या में गांवों को शामिल किया गया था लेकिन उनमें

से अधिकांश केस स्टडी की प्रकृति के थे। इसलिए, यह जांच सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के आकार, उपयोग और योगदान के व्यापक राज्य और राष्ट्रीय स्तर के अनुमान प्रदान करने का पहला प्रयास है।

यह देश के विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों के लिए अलग-अलग अनुमान भी प्रदान करता है। सार्वजनिक संपत्ति संसाधन प्राकृतिक संसाधन हैं जिनका स्वामित्व और प्रबंधन व्यक्तियों के बजाय समुदाय या समाज द्वारा सामूहिक रूप से किया जाता है। सामान्य संपत्ति संसाधनों को मोटे तौर पर उन (गैर-अनन्य) संसाधनों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिनमें लोगों के एक समूह के समान अधिकार होते हैं। इससे अर्थव्यवस्था के ग्रामीण विकास में सामान्य संपत्ति संसाधनों की भूमिका का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

वे संसाधन जो समुदाय के सभी सदस्यों के लिए उपलब्ध हों और समूह के संयुक्त प्रयासों से बनाए रखे जाते हों, सार्वजनिक संपत्ति संसाधन कहलाते हैं। ये संसाधन समग्र रूप से समुदाय के होते हैं, किसी एक व्यक्ति के नहीं। सार्वजनिक पार्क, सामुदायिक उद्यान और साझा चरागाह इन संसाधनों के कुछ उदाहरण हैं। एक घर या परिवार से बड़ा समुदाय या समूह इन संसाधनों को साझा करता है, और समुदाय को इनके उपयोग का अधिकार है। समुदाय इन संसाधनों के रखरखाव और प्रबंधन के लिए भी उत्तरदायी है। चूँकि ये भोजन, पानी और मनोरंजन स्थल जैसी आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करते हैं, इसलिए ये संसाधन समुदाय के अस्तित्व और कल्याण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन

गाँव के चारागाह, सामुदायिक वनभूमि, बंजर भूमि, सामुदायिक खलिहान, अपशिष्ट निपटान स्थल, जलग्रहण क्षेत्र की नालियाँ, गाँव के तालाब, टैंक, नदियाँ/नाले और नदी तल भारत में सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के उदाहरण हैं (जोधा 1986)। संसाधनों और संसाधन उपयोगकर्ताओं की विविध प्रकृति के कारण सूक्ष्म स्तर पर पहुँच, उपयोग सुविधाओं और अन्य पहलुओं के संदर्भ में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन परिदृश्यों की विविधता के कारण सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों का अनुमान लगाना जटिल है। इसके बावजूद, भारत के राष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक संपत्ति संसाधन की कई परिभाषाएँ और सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों का वृहद स्तर पर परिमाणीकरण उपलब्ध है।

जब भी कोई अनुपात प्रस्तुत किया जाता है, तो उस कुल का निर्धारण करना आवश्यक होता है जिससे हिस्से की गणना की गई है। राष्ट्रीय बंजर भूमि विकास बोर्ड (NWDB) के तकनीकी समूह की रिपोर्ट के अनुसार, "बंजर भूमि का अर्थ है बंजर भूमि जिसे उचित प्रयास से वनस्पति आवरण के अंतर्गत लाया जा सकता है और जो वर्तमान में कम उपयोग में है और जो उचित जल और मृदा प्रबंधन के अभाव में या प्राकृतिक कारणों से खराब हो रही है।" यह परिभाषा पारिस्थितिक लक्षणों और भूमि उत्पादन को ध्यान में रखकर बनाई गई है। इन अलग-अलग मानदंडों का उपयोग करके बंजर भूमि का अनुमान लगाने में समस्याएँ हैं। विभिन्न अनुमानों के तहत कुल गणना उपलब्ध नहीं है क्योंकि ये परिभाषाएँ सरकारी कृषि विभाग के भूमि उपयोग वर्गीकरण के अनुरूप नहीं हैं। नमूनों का उपयोग करके, वैज्ञानिकों ने विश्वसनीय अनुमान लगाने का प्रयास किया है। हालाँकि, पूर्ण शीर्ष पृष्ठों के अभाव और विरल स्थलाकृतिक जानकारी के कारण अनुमान लगाना चुनौतीपूर्ण और गलत है। फिर भी, कई वृहद स्तर के अनुमान उपलब्ध हैं।

कानूनी स्वामित्व के आधार पर बंजर भूमि का अनुमान सरकारी भूमि उपयोग वर्गीकरण आँकड़ों द्वारा प्रदान किया जाता है। बागची और फिलिप ने सरकारी भूमि उपयोग वर्गीकरण का उपयोग करके राज्यों में गैर-वनीय बंजर भूमि की मात्रा की गणना की और 80.17 मिलियन हेक्टेयर का अनुमान लगाया। हालाँकि, सरकारी

वर्गीकरण और अनुमानों में गंभीर खामियाँ हैं, इसलिए सूक्ष्म-स्तरीय नियोजन के लिए उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। राष्ट्रीय सुदूर संवेदन एजेंसी (NRSA) ने 1989 में बंजर भूमि का आकलन करने के लिए ग्राउंड ट्रॉथिंग और सुदूर संवेदन का उपयोग किया। NRSA ने देश भर के 146 जिलों के गहन उपग्रह मानचित्रण के आधार पर 129.57 मिलियन हेक्टेयर बंजर भूमि का अनुमान लगाया, जिसमें से 93.69 मिलियन हेक्टेयर गैर-वनीय क्षेत्र थे।

साहित्यिक समीक्षा

अज़विंडिनी इसाक रामानो (2025) का उद्देश्य दक्षिण अफ्रीका के लिम्पोपो प्रांत के मुसीना स्थानीय नगर पालिका में ग्रामीण आजीविका पर प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन (एनआरएम), संरक्षण और पारिस्थितिक पर्यटन नेतृत्व के मुद्दों की जांच करना था। इसने पारिस्थितिक पर्यटन और एकीकृत ग्रामीण गतिविधियों के मौजूदा और संभावित प्रभावों और जलवायु परिवर्तन पर उनके पर्यावरणीय प्रभावों और इसके विपरीत, निर्वाह और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित किया। अध्ययन में नगरपालिका की जैव विविधता, समग्र आजीविका और पर्यटन संसाधन और सुविधा संबंधी चिंताओं की जांच करने के लिए एक व्यापक साहित्य समीक्षा, फोकस समूह चर्चा और क्षेत्र अवलोकन का उपयोग किया गया है, जिसमें अध्ययन क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के निहितार्थ हैं, डेटा का मैन्युअल रूप से और क्रॉस टैब्यूलेशन और केंद्रीय प्रवृत्तियों के माध्यम से भी विश्लेषण किया गया है। अध्ययन ने नगर पालिका में जलवायु परिवर्तन के खतरों को कम करने और स्थानीय समुदायों के लिए जीविका को बढ़ावा देने हेतु सभ्य पारिस्थितिक पर्यटन सुविधाओं और गतिविधियों तथा एक प्रबंधकीय दृष्टिकोण की आवश्यकता की पहचान की है। अपने तर्क और क्षमता के भीतर, यह अध्ययन नगर पालिका के भीतर जलवायु परिवर्तन के परिणामों के संबंध में संरक्षण, पारिस्थितिक पर्यटन प्रबंधन, पर्यावरणीय क्षरण और जिम्मेदार पर्यटन गुणों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

अस्मिता देबबर्मा (2023) ने त्रिपुरा में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन प्रबंधन के शासन और सर्वोत्तम प्रथाओं पर अध्ययन किया है। कई भारतीय अपनी जीविका के लिए जंगल, बंजर भूमि, चरागाह भूमि, जल आपूर्ति आदि जैसे सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों पर निर्भर हैं। हालाँकि, जो लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, उनके लिए सतत विकास प्राप्त करने हेतु सामुदायिक सहयोग से इन सार्वजनिक संसाधनों की खेती करना न केवल एक अपरिहार्य ज़िम्मेदारी है, बल्कि एक कठिन कार्य भी है। ग्रामीण त्रिपुरा में, लोग, विशेष रूप से स्वदेशी समुदायों से संबंधित, अपने परिवार के लिए आय के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों पर निर्भर हैं। स्थायी समुदाय बनाने के लिए, इस अध्ययन का लक्ष्य त्रिपुरा में स्थानीय ग्राम पंचायतों और समुदाय के सदस्यों द्वारा सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के प्रबंधन के लिए अपनाई गई सर्वोत्तम प्रथाओं और शासन ढाँचों की जाँच और मूल्यांकन करना है।

चियारा डी. अल्पाओस एट अल. (2023) ने "सार्वजनिक संपत्ति संसाधन दोहन: एक वास्तविक विकल्प दृष्टिकोण" पर अध्ययन किया है। वनभूमि और कृषि भूमि कई प्रकार की उपयोगिताएँ उत्पन्न कर सकती हैं और विविध उद्देश्यों की पूर्ति कर सकती हैं। सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों और रीति-रिवाजों के रूप में उनके अंतर्निहित गुणों के कारण, समाज उनमें से कुछ से लाभान्वित हो सकता है, भले ही भूस्वामी उनमें से अधिकांश से लाभ कमाते हों। कई इतालवी प्रांतों में जंगलों और निजी स्वामित्व वाली कृषि भूमि पर मशरूम एकत्र करने की अनुमति है। भूस्वामियों और उपयोगकर्ताओं के बीच बढ़ते विवाद इन संसाधनों के प्रबंधन को कठिन बना देते हैं। इसके अलावा, उपयोगकर्ताओं का दबाव स्टॉक संरक्षण की समस्याओं को जन्म देता है, जो समकालीन कृषि द्वारा पहले से ही गंभीर रूप से संकटग्रस्त क्षेत्रों में जैव विविधता को और अधिक खतरे में डाल देता है। ये संसाधन

दोहन में प्रवेश करने या उससे बाहर निकलने के निर्णय की विस्तार से जाँच करते हैं, जिसमें प्रतिस्पर्धी उपयोगकर्ताओं की संख्या, प्रवेश लागत और संसाधन स्टॉक अनिश्चितता को ध्यान में रखा गया है।

ए. प्रभाकरन (2022) ने जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय क्षरण और सार्वजनिक संपत्ति संसाधन प्रबंधन पर अध्ययन किया है। नेपाल जैसे उभरते देशों में, सार्वजनिक संपत्ति संसाधन—विशेषकर वन और चारागाह—तेज़ी से घट रहे हैं, जिससे कई अप्रत्याशित और अनजाने पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा हो रही हैं। कई नवशास्त्रीय अर्थशास्त्रियों का मानना है कि जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न गरीबी ने सार्वजनिक संसाधनों पर दबाव डाला है, जिसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक संसाधनों की त्रासदी के रूप में जाना जाता है। उनका तर्क है कि बढ़ते जनसंख्या दबाव के परिणामस्वरूप, सार्वजनिक संसाधनों के नष्ट होने का खतरा है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति दूसरों की कीमत पर अपने लाभ को अधिकतम करने का प्रयास करता है। यदि समय रहते इन समस्याओं का समाधान नहीं किया गया, तो ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाला जलवायु परिवर्तन, गरीब किसानों के सामने पहले से ही मौजूद गंभीर समस्याओं को और भी बदतर बना देगा।

जय प्रकाश वर्मा (2022) ने "सार्वजनिक संपत्ति संसाधन और कृषि से इसके संबंध: उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जिले का एक अध्ययन" पर अध्ययन किया। सार्वजनिक संपत्ति संसाधन सामान्यतः ग्रामीण विकास के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों के जीवन के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। सार्वजनिक संपत्ति संसाधन कृषि आपदाओं के दौरान सुरक्षा कवच का काम करते हैं और साथ ही ग्रामीण वंचित लोगों को रोज़गार और धन भी प्रदान करते हैं। ग्रामीण गरीबी का मुख्य कारण सार्वजनिक भूमि संसाधनों की उपलब्धता है। सार्वजनिक संपत्ति संसाधन ग्रामीण आबादी, विशेषकर गरीबों, के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों की दीर्घकालिक स्थिरता पर चिंताएँ इस तथ्य से उत्पन्न होती हैं कि गाँव के चरागाहों के अलावा, बहुत से लोग भौतिक और अमूर्त, दोनों प्रकार की सेवाओं के लिए इन पर निर्भर हैं। दूसरा, प्राकृतिक संसाधनों की वहन क्षमता और स्थिरता जैविक दबावों से प्रभावित हुई है, जिनमें मानव-जनित समस्याएँ, पशुधन और जनसंख्या वृद्धि शामिल हैं। औद्योगीकरण और संसाधनों के राष्ट्रीयकरण के परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों को भी नुकसान हुआ है। दीर्घकालिक विकास इसी का परिणाम है। बड़े पैमाने पर स्थायी आजीविका का विकास उभरते राष्ट्रों के प्रमुख लक्ष्यों में से एक है। आधुनिकीकरण, अनियंत्रित विकास, उपनिवेशीकरण और तेज़ आर्थिक विस्तार ने प्राकृतिक संसाधनों को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचाया है, जिससे भारत बर्बाद हो गया है। वर्तमान में, प्राकृतिक संसाधनों के ह्रास के कारण जनसंख्या की लगातार बढ़ती ज़रूरतों को पूरा करने की आर्थिक क्षमता बाधित हो रही है।

उन्नीकृष्णन यू. (2022) ने सतही जल संसाधन के विशेष संदर्भ में तिरुवनंतपुरम जिले के निचले इलाकों में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन प्रबंधन पर अध्ययन किया है। केरल का राजधानी जिला तिरुवनंतपुरम, राज्य का सबसे भीड़भाड़ वाला जिला है। जिले के अन्य भौतिक प्रभागों (मध्यभूमि, तराई और उच्चभूमि) की तुलना में तराई में जनसंख्या घनत्व अधिक है। जिले के तराई क्षेत्र में, सतही जल के अधिकांश स्रोत पाँच बैकवाटर झीलें और एक मीठे पानी की झील हैं। इस जांच के लिए वेल्लयानी मीठे पानी की झीलों और कादिनामकुलम बैकवाटर को अध्ययन इकाइयों के रूप में चुना गया है। जिले का मुख्य बैकवाटर, कादिनामकुलम, उत्तर में स्थित है "तिरुवनंतपुरम जिले की निचली भूमि में सतही जल संसाधन के विशेष संदर्भ में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन प्रबंधन" अध्ययन का उद्देश्य इन दोनों जल निकायों के उपयोग से संबंधित मुद्दों, साथ ही तनाव कारकों और उपयोगकर्ता की स्थिति को समझना और उनके कुशल प्रबंधन के लिए नीतिगत उपाय सुझाना था।

दबी तगम (2021) ने सार्वजनिक संपत्ति वन संसाधन और ग्रामीण आजीविका रणनीतियाँ - अरुणाचल प्रदेश का एक अध्ययन पर अध्ययन किया है। वर्तमान अध्ययन के अनुसार, अरुणाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों पर बहुत अधिक निर्भर करती है। प्राचीन काल से, सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों ने राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, और वे अपनी आजीविका के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ एकत्र करते रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, संसाधन-समृद्ध लेकिन पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील इस क्षेत्र में ग्रामीण समुदायों के लिए सार्वजनिक संपत्ति संसाधन आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। हालाँकि भूमि के लिए निजी संपत्ति अधिकार स्थापित किए गए हैं, फिर भी प्रत्येक समुदाय के पास कुछ स्पष्ट रूप से परिभाषित स्थानीय सार्वजनिक संपत्ति संसाधन हैं, जैसे नदियाँ, तालाब, घास के मैदान और जंगल। रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण समुदाय अभी भी अपनी आजीविका के लिए सार्वजनिक संपत्ति संसाधन पर निर्भर हैं, भले ही समय के साथ उनकी संख्या और निर्भरता कम हो रही हो। अध्ययन ने घरेलू सामाजिक-आर्थिक चरों, जैसे परिवार का आकार, भूमि की उपलब्धता और शैक्षिक उपलब्धि, और सार्वजनिक वनों पर निर्भरता के बीच एक उच्च सहसंबंध को भी प्रदर्शित किया।

महेश कुमार गौड़ और अन्य (2020) ने भारत के राजस्थान की शुष्क भूमि में ग्राम पारिस्थितिकी तंत्र सेवा केंद्र के रूप में सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों पर अध्ययन किया है। ग्रामीण समुदायों और उनकी अर्थव्यवस्थाओं का आजीविका विश्लेषण काफी तनाव में है। गांव की सार्वजनिक संपत्ति संसाधन ग्रामीण शुष्क भूमि समुदायों के आर्थिक अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं। स्थलाकृतिक, भू-आकृति विज्ञान, जलवायु, एडैफिक और भौतिक विशेषताओं में महत्वपूर्ण कार्यात्मक अंतरों के कारण, भारत के पश्चिमी राजस्थान की शुष्क भूमि में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन पारिस्थितिक तंत्र की विविधता को प्रदर्शित करते हैं। स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र पर अत्यधिक चराई और मानवीय गतिविधियों के कारण महत्वपूर्ण जैविक तनाव से समस्या और बदतर हो गई है। ग्रामीण समुदाय और उनकी आजीविका के लिए सार्वजनिक संपत्ति संसाधन पर उनकी निर्भरता परस्पर क्रिया करती है। यह अक्सर ज्ञात है कि भारत के शुष्क क्षेत्रों में ग्रामीण लोगों के जीवन और अर्थव्यवस्था में, सार्वजनिक संपत्ति संसाधन वर्तमान अध्ययन का प्राथमिक लक्ष्य एक ग्रामीण पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के संचालन का आकलन करना था, इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हुए कि वे एक सेवा प्रदाता के रूप में कितनी अच्छी तरह कार्य करते हैं और उनके नुकसान या क्षरण के सामाजिक-आर्थिक परिणाम क्या होंगे। यह पाया गया है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन गाँवों की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं और छोटे, सीमांत और भूमिहीन परिवार अपनी जीविका के लिए उन पर बहुत अधिक निर्भर हैं। ग्राम निकायों को समुदायों की भागीदारी को शामिल करते हुए सार्वजनिक संपत्ति संसाधन को स्थायी रूप से तुरंत संभालना चाहिए।

समंक विश्लेषण

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के शामली जिले में ग्रामीण विकास में सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों की भूमिका से संबंधित है। यह मुख्यतः प्राथमिक और द्वितीयक आँकड़ों के स्रोतों पर आधारित है। यह अध्ययन एक वर्णनात्मक अध्ययन है। इसमें अवधारणाओं का व्यवहारिक मूल्यांकन शामिल है। अध्ययन में 300 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है।

तालिका 1: सार्वजनिक संपत्ति संसाधन का आय पर प्रभाव

क्रमांक	आय पर सकारात्मक प्रभाव	आवृत्ति	प्रतिशत

1	हमेशा	167	55.67
2	अक्सर	68	22.67
3	कभी-कभी	33	11.00
4	शायद ही कभी	22	7.33
5	कभी नहीं	10	3.33
कुल		**300**	**100**

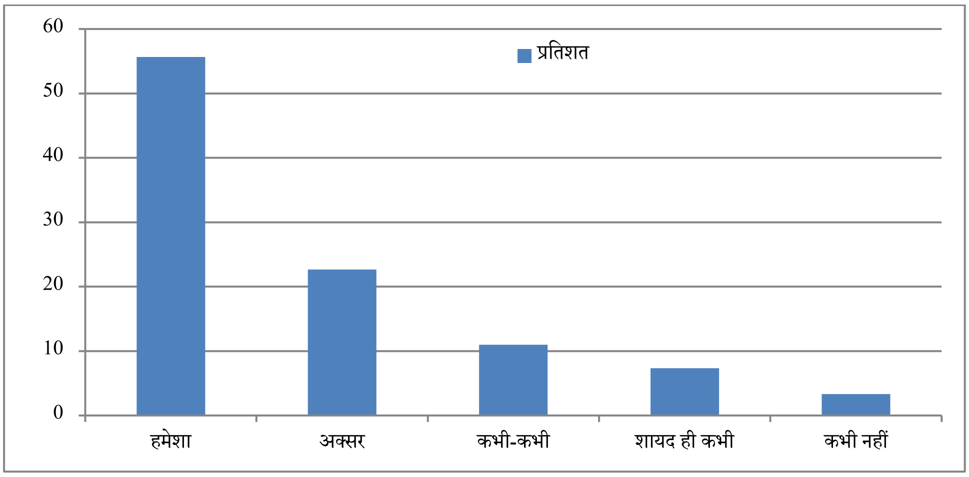

चित्र 1: सार्वजनिक संपत्ति संसाधन का आय पर प्रभाव प्रतिशत

उपरोक्त तालिका उत्तरदाताओं की आय पर सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के सकारात्मक प्रभाव डालने वाले कथन पर प्रतिक्रियाओं को दर्शाती है। कुल 300 उत्तरदाताओं में से 167 (55.67%) उत्तरदाताओं का कहना है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन हमेशा आय पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं, 68 (22.67%) उत्तरदाताओं का कहना है कि अक्सर सार्वजनिक संपत्ति संसाधन आय पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं, 33 (11.00%) उत्तरदाताओं का कहना है कि कभी-कभी सार्वजनिक संपत्ति संसाधन आय पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं, 22 (7.33%) का कहना है कि शायद ही कभी सार्वजनिक संपत्ति संसाधन भूमि संसाधन आय पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं और 13 (3.25%) का कहना है कि कभी भी सार्वजनिक संपत्ति संसाधन आय पर सकारात्मक प्रभाव नहीं डालते हैं। अतः उपरोक्त तालिका से यह देखा गया कि अधिकांश उत्तरदाताओं का कहना है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन हमेशा उत्तरदाताओं की आय पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

तालिका 2: सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के कारण आय में वृद्धि

क्रमांक	**आय में वृद्धि**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	बहुत अधिक वृद्धि	26	8.67
2	अधिक वृद्धि	68	22.67

3	तटस्थ	7	2.33
4	कम वृद्धि	177	59.00
5	बहुत कम वृद्धि	22	7.33
कुल		**300**	**100**

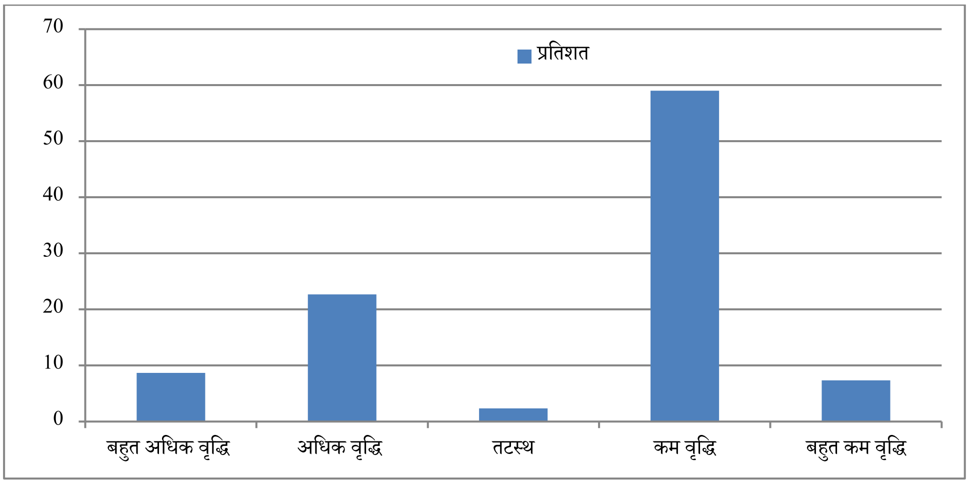

चित्र 2: सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के कारण आय में वृद्धि प्रतिशत

उपर्युक्त तालिका दर्शाती है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के कारण आय में कितनी वृद्धि हुई। कुल 300 उत्तरदाताओं में से 26 (8.67%) उत्तरदाताओं का कहना है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के कारण आय में बहुत अधिक वृद्धि हुई है, 68 (22.67%) उत्तरदाताओं का कहना है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के कारण आय में अधिक वृद्धि हुई है, 7 (2.33%) उत्तरदाता इस बारे में तटस्थ हैं, 177 (59.00%) उत्तरदाताओं का कहना है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के कारण आय में कम वृद्धि हुई है और 22 (7.33%) उत्तरदाताओं का कहना है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के कारण आय में बहुत कम वृद्धि हुई है। अतः उपरोक्त तालिका से यह पाया गया कि अधिकांश (59.00%) उत्तरदाताओं का कहना है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के कारण आय में बहुत कम वृद्धि हुई है और बहुत कम उत्तरदाता तटस्थ हैं।

तालिका 3: सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से आय प्राप्त करने की आवृत्ति

क्रमांक	**आवृत्ति**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	मासिक	16	5.33
2	छह महीने	45	15.00
3	वार्षिक	96	32.00
4	कोई निश्चित नहीं	143	47.67
	कुल	**300**	**100**

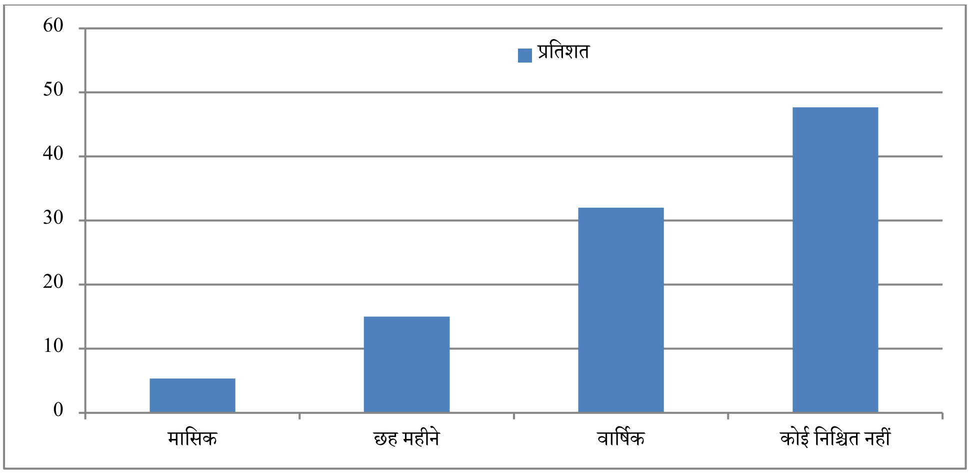

चित्र 3: सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से आय प्राप्त करने की प्रतिशत

उपरोक्त तालिका सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से आय प्राप्त करने की आवृत्ति दर्शाती है। कुल 300 उत्तरदाताओं में से 16 (5.33%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उन्हें सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से मासिक आय प्राप्त होती है, 45 (15.00%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उन्हें सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से छमाही आय प्राप्त होती है, 96 (32.00%) उत्तरदाताओं का कहना है कि उन्हें सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से वार्षिक आय प्राप्त होती है और 143 (47.67%) उत्तरदाताओं का कहना है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से आय प्राप्त करने की कोई निश्चित समय-सारिणी नहीं है। अतः उपरोक्त तालिका से यह पाया गया कि अधिकांश उत्तरदाताओं का कहना है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से आय प्राप्त करने की कोई निश्चित समय-सारिणी नहीं है और बहुत कम उत्तरदाताओं का कहना है कि उन्हें सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से मासिक आय प्राप्त होती है।

तालिका 4: बचत और निवेश में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन का योगदान

क्रमांक	योगदान	पूरी तरह असहमत	असहमत	तटस्थ	सहमत	पूरी तरह सहमत	कुल	%	Mean
1	सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के कारण आपकी बचत की आदतें बढ़ी हैं।	10	40	15	544	645	1254	83.60	4.17
2	सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के कारण आपके बचत संसाधनों का आकार बढ़ रहा है।	7	46	9	496	715	1273	84.86	4.25
3	सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से आय में वृद्धि के साथ- साथ आप बचत भी बढ़ा रहे हैं।	13	34	27	608	545	1227	81.86	4.05
4	सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के कारण आपकी निवेश आदतें विकसित होती हैं	26	58	18	696	325	1123	74.81	3.75

5	आप जो कमाई कर रहे हैं वह सार्वजनिक संपत्ति संसाधन आय से प्राप्त निवेश से आ रही है	22	70	21	392	690	1195	79.71	3.98
6	सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के कारण बचत और निवेश में स्थिरता है	13	42	15	720	405	1195	79.71	3.98

इस तालिका में बचत और निवेश में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन का योगदान दर्शाया गया है। नमूना अध्ययन क्षेत्र में बचत और निवेश में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के योगदान के संबंध में उत्तरदाताओं के व्यक्तिगत कथन का मूल्य मापा गया। व्यक्तिगत कथन के लिए अंक 300 से 1500 के बीच होंगे। 900 से कम अंक का अर्थ है प्रतिकूल राय और ठीक 900 अंक का अर्थ है तटस्थ रवैया, 900 से अधिक अंक का अर्थ है अनुकूल राय और यदि अंक लगभग 1500 है तो यह सर्वाधिक अनुकूल राय दर्शाता है।

1. सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के कारण आपकी बचत की आदतें बढ़ी हैं। इस कथन के प्रति प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल अंक 1254 है यानी 83.60 प्रतिशतक मूल्य और माध्य 4.17 है, यह प्रतिक्रिया देने की एकरूपता को दर्शाता है।
2. सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के कारण आपकी बचत का आकार बढ़ रहा है। इस कथन के प्रति प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल अंक 1273 है यानी 84.36 प्रतिशतक मूल्य और माध्य 4.25 है, यह प्रतिक्रिया देने की एकरूपता को दर्शाता है।
3. सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से आय में वृद्धि के साथ आप बचत भी बढ़ा रहे हैं। इस कथन के प्रति प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल अंक 1227 है यानी 81.85 प्रतिशतक मूल्य और माध्य 4.08 है।
4. सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के कारण आपकी निवेश आदतों में वृद्धि हुई है। इस कथन पर प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल स्कोर 1123 है, अर्थात 74.8 प्रतिशतक मान और माध्य 3.75 है, जो प्रतिक्रिया देने में एकरूपता दर्शाता है।
5. आप सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से प्राप्त निवेश से महत्वपूर्ण आय अर्जित कर रहे हैं। इस कथन के प्रति प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल स्कोर 1195 है यानी 79.7 प्रतिशतक मूल्य और औसत 3.98 है, यह प्रतिक्रिया देने की एकरूपता को दर्शाता है।
6. सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के कारण बचत और निवेश में एकरूपता है। इस कथन के प्रति प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल स्कोर 1195 है यानी 79.7 प्रतिशतक मूल्य और औसत 3.98 है, यह प्रतिक्रिया देने की एकरूपता को दर्शाता है।

तालिका 5: ग्रामीण सामाजिक विकास में सार्वजनिक संपत्ति संसाधन की भूमिका

क्रमांक	योगदान	पूरी तरह असहमत	असहमत	तटस्थ	सहमत	पूरी तरह सहमत	कुल	%	Mean
1	सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के	17	106	15	484	520	1142	76.13	3.82

	कारण सामाजिक सद्भाव और शांति में सुधार हुआ।								
2	सार्वजानिक संपत्ति संसाधन के कारण होने वाले सामाजिक विवादों और संघर्षों में कमी आई है।	13	60	12	628	480	1193	79.53	3.97
3	सार्वजानिक संपत्ति संसाधन के कारण आपके जीवन स्तर में सुधार हुआ है।	24	70	15	572	465	1146	76.40	3.83
4	सार्वजानिक संपत्ति संसाधन के कारण आपकी सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा में सुधार हुआ है।	20	58	9	608	480	1175	78.33	3.92
5	सार्वजानिक संपत्ति संसाधन के कारण लोगों में सामाजिक बंधन विकसित हुआ है।	14	40	39	448	705	1246	83.07	4.15
6	सार्वजानिक संपत्ति संसाधन के प्रति लोगों का दृष्टिकोण सामाजिक रूप से सराहनीय है और उनमें से अधिकांश लोग अपनी संयुक्त जिम्मेदारियों के प्रति अच्छी तरह से जागरूक हैं।	6	36	24	468	755	1289	85.93	4.31
7	सार्वजानिक संपत्ति संसाधन सदस्यों के बीच सामाजिक एकता में सुधार हुआ।	16	44	12	536	620	1228	81.87	4.08

ग्रामीण सामाजिक विकास में सार्वजानिक संपत्ति संसाधन की भूमिका इस तालिका में दर्शाई गई है। नमूना अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण सामाजिक विकास में सार्वजानिक संपत्ति संसाधन की भूमिका के संबंध में उत्तरदाताओं के व्यक्तिगत कथन का स्कोर मापा गया। व्यक्तिगत कथन के लिए स्कोर 300 से 1500 के बीच होगा। 900 से कम स्कोर का अर्थ है प्रतिकूल राय और ठीक 900 स्कोर का अर्थ है तटस्थ रवैया, 900 से अधिक स्कोर का अर्थ है अनुकूल राय और यदि स्कोर लगभग 1500 है तो यह सबसे अनुकूल राय दर्शाता है।

- सार्वजानिक संपत्ति संसाधन के कारण सामाजिक सद्भाव और शांति में सुधार हुआ। इस कथन पर प्राप्त प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल अंक 1142 अर्थात् 76.13 प्रतिशतक मान और माध्य 3.82 है, जो प्रतिक्रिया देने में एकरूपता दर्शाता है।

- सार्वजानिक संपत्ति संसाधन के कारण सामाजिक विवादों और संघर्षों में कमी आई है। इस कथन पर प्राप्त प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल स्कोर 1193 है, अर्थात 79.53 प्रतिशतक मान और माध्य 3.97 है, जो प्रतिक्रिया देने में एकरूपता दर्शाता है।
- सार्वजानिक संपत्ति संसाधन के कारण आपके जीवन स्तर में सुधार हुआ है। इस कथन पर प्राप्त प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल अंक 1146 हैं, अर्थात् 76.40 प्रतिशतक मान और माध्य 3.83 है, जो प्रतिक्रिया देने में एकरूपता दर्शाता है।
- सार्वजानिक संपत्ति संसाधन के कारण आपकी सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा में सुधार हुआ है। इस कथन के प्रति प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल स्कोर 1175 है यानी 78.33 प्रतिशतक मूल्य और माध्य 3.92 है, यह प्रतिक्रिया देने में एकरूपता को दर्शाता है।
- सार्वजानिक संपत्ति संसाधन के कारण लोगों के बीच सामाजिक बंधन विकसित हुआ है। इस कथन के प्रति प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल स्कोर 1246 है यानी 83.07 प्रतिशतक मूल्य और माध्य 4.15 है, यह प्रतिक्रिया देने में एकरूपता को दर्शाता है।
- सार्वजानिक संपत्ति संसाधन के प्रति लोगों का दृष्टिकोण सामाजिक रूप से सराहनीय है और उनमें से अधिकांश अपनी संयुक्त ज़िम्मेदारियों के प्रति भली-भाँति जागरूक हैं। इस कथन पर प्राप्त प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल अंक 1289 अर्थात् 85.93 प्रतिशतक मान और माध्य 4.31 है, जो प्रतिक्रिया देने में एकरूपता दर्शाता है।
- सार्वजानिक संपत्ति संसाधन सदस्यों के बीच सामाजिक एकता में सुधार हुआ। इस कथन पर प्राप्त प्रतिक्रियाएँ अनुकूल राय दर्शाती हैं क्योंकि कुल अंक 1228 अर्थात् 81.87 प्रतिशतक मान और माध्य 4.08 है जो प्रतिक्रिया देने वालों की एकरूपता को दर्शाता है।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह देखा गया कि अधिकांश उत्तरदाताओं का कहना है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन हमेशा उत्तरदाताओं की आय पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। और अधिकांश उत्तरदाताओं का कहना है कि सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से आय प्राप्त करने की कोई निश्चित समय-सारिणी नहीं है और बहुत कम उत्तरदाताओं का कहना है कि उन्हें सार्वजनिक संपत्ति संसाधन से मासिक आय प्राप्त होती है। सार्वजनिक संपत्ति संसाधन ग्रामीण लोगों की बचत और निवेश में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सार्वजनिक संपत्ति संसाधनों के कारण उनकी बचत की आदतें बढ़ी हैं, बचत का आकार बढ़ा है, बचत में वृद्धि हुई है, निवेश की आदतें विकसित हुई हैं, वे निवेश से महत्वपूर्ण आय अर्जित कर रहे हैं और बचत और निवेश में एकरूपता है। यह भी स्पष्ट है कि सार्वजानिक संपत्ति संसाधन ग्रामीण सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के कारण सामाजिक सद्भाव और शांति में सुधार हुआ है, सामाजिक विवादों और झगड़ों में कमी आई है, जीवन स्तर में सुधार हुआ है, सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा में सुधार हुआ है, सामाजिक बंधन विकसित हुए हैं, सार्वजनिक संपत्ति संसाधन के प्रति लोगों का दृष्टिकोण सामाजिक रूप से सराहनीय है और अधिकांश लोग अपनी संयुक्त जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक हैं तथा सार्वजनिक संपत्ति संसाधन सदस्यों के बीच सामाजिक एकता में सुधार हुआ है।

सन्दर्भ

1. अज़विंडिनी इसाक रामानो (2025), "द रूरल एरियाज कन्ज़र्वेसी साइट्स एंड एकतौरिस्म क्लाइमेट चेंज कंडरीएस: ऐन इंटीग्रेटेड रूरल इनिशिएटिव इम्पैक्ट ऑन एनवायर्नमेंटल सस्टेनेबिलिटी एंड लिवेलीहुड्स। टूरिज्म क्रिटिकेस 3 मार्च 2025; 6 (1): 81–111।
2. अस्मिता देबबर्मा (2023) "गवर्नेंस एंड बेस्ट प्रैक्टिसेज ऑफ़ कॉमन प्रॉपर्टी रिसोर्सेज मैनेजमेंट इन त्रिपुरा", जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एंड पॉलिटिकल साइंस, 3 (02), 1–8। https://doi.org/10.55529/jpps.32.1.8।
3. चियारा डी'अल्पाओस एट अल. (2023) कॉमन-प्रॉपर्टी रिसोर्स एक्सप्लॉइटेशन: ए रियल ऑप्शंस अप्रोच, https://doi.org/10.3390/land12071304.
4. प्रभाकरन (2022) "क्लाइमेट चेंज एनवायर्नमेंटल डिग्रडेशन एंड कॉमन प्रॉपर्टी रिसोर्सेज मैनेजमेंट", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन एंड रिव्यूज़, खंड 3, संख्या 9, 2022, पृष्ठ 1620-1625
5. जय प्रकाश वर्मा (2022) "कॉमन प्रॉपर्टी रिसोर्सेज एंड इट्स लिंकेजेज विथ एग्रीकल्चर : ए स्टडी ऑफ़ लखीमपुर खीरी डिस्ट्रिक्ट इन उत्तर प्रदेश", आईओएसआर जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस (आईओएसआर-जेएचएसएस) खंड 27, अंक 7, श्रृंखला 1 (जुलाई 2022) 45-55 ई-आईएसएसएन: 2279-0837, पी-आईएसएसएन: 2279-0845।
6. उन्नीकृष्णन यू. (2022) "कॉमन प्रॉपर्टी ऑफ़ रिसोर्सेज (सी पी आर) मैनेजमेंट इन द लोलैंड्स ऑफ़ थिरुवनंतपुरम डिस्ट्रिक्ट विथ स्पेशल रिफरेन्स टू सरफेस वाटर रिसोर्सेज" अ थीसिस सुबेटेड टू द यूनिवर्सिटी ऑफ़ हैदराबाद इन पार्शियल फुलफिलमेंट ऑफ़ द रिक्वायरमेंट्स फॉर द अवार्ड ऑफ़ द डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी
7. दबी तगम (2021) "कॉमन" प्रॉपर्टी फारेस्ट रिसोर्सेज एंड रूरल लाइवलीहुड स्ट्रेटेजीज- अ स्टडी ऑफ़ अरुणाचल प्रदेश थीसिस सुबेटेड टू द राजीव गाँधी यूनिवर्सिटी, अ थीसिस फॉर द डिग्री ऑफ़ डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी इन इकोनॉमिक्स
8. महेश कुमार गौड़ एट अल. (2020) "कॉमन प्रॉपर्टी रिसोर्सेज ऐज विलेज इकोसिस्टम सर्विस सेंटर इन ड्राई लैंड्स ऑफ़ राजस्थान इंडिया", जर्नल ऑफ रेंजलैंड साइंस, खंड 10 नंबर 1 पीपी 57-72।
9. श्रेया मित्रा (2020) भारत में साझा संपत्ति संसाधनों तक पहुंच और घरेलू खाद्य सुरक्षा पर इसका प्रभाव, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, मॉडर्न मैनेजमेंट, एप्लाइड साइंस एंड सोशल साइंस (आईजेईएमएमएएसएसएस), खंड 02, संख्या 01, 2020, पृष्ठ 161-167।
10. मौमिता शुक्लबैद्य साहा, सम्राट गोस्वामी (2009) साझा संपत्ति संसाधनों के साहित्य में परिप्रेक्ष्य: एक संक्षिप्त समीक्षा, रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज 2019 10 (1): 253-258। DOI: 10.5958/2321-5828.2019.00046.9।
11. राम प्रकाश (2019) साझा संपत्ति संसाधनों का प्रबंधन: उत्तर प्रदेश के लिए एक व्यावहारिक मॉडल। भारत”, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसेंट साइंटिफिक रिसर्च, खंड 19, अंक 4(जी) पृष्ठ 32136-32143।
12. रथ शेखर सुधांशु, पति चरण उमा (2019) साझा संपत्ति संसाधन दोहन के लिए एक सामान्य संतुलन दृष्टिकोण, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एंड टेक्नोलॉजी रिसर्च खंड 8, अंक 11, आईएसएसएन 2277-8616 पृष्ठ 2815-2821।